

# हमारा सशस्त्र बल हर चुनौती से निपट सकेगा



किसी भी देश के लिए शांति, सद्भाव बनाए रखने और सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए पड़ोसी बहुत महत्वपूर्ण हैं। दुर्भाग्य से, भारत पाकिस्तान जैसे देश से, घिरा हुआ है जो आतंकवाद, सीमा पार से घुसपैठ और धार्मिक उग्रवाद में विश्वास करता है और चीन जो किसी भी तरह से अपने क्षेत्र के विस्तार में विश्वास करता है और नक्सलियों को प्रशिक्षण और हथियार और गोला-बारूद प्रदान करके सामाजिक अशांति पैदा करता है। इसलिए इन दोनों देशों का मुकाबला करने के लिए भारत को दोनों मोर्चों पर एक साथ तैयार रहना चाहिए, जिसमें प्रतिकूल परिस्थितियां, कई स्थानों पर प्रतिकूल भौगोलिक स्थिति और प्रतिकूल पर्यावरणीय परिस्थितियां हैं। पाकिस्तान द्वारा सीमा पार आतंकवाद और भारत में नक्सलवाद को चीन के समर्थन और दोनों देशों द्वारा सीमा पर दुस्साहस के कारण भारत के लिए सामरिक और तकनीकी रूप से उन्नत रक्षा बलों की एक मजबूत आवश्यकता है। यद्यपि हमारे सशस्त्र बल मजबूत हैं और उन्होंने शुरू से ही अपनी क्षमताओं का प्रदर्शन किया है, लेकिन उन्हें समय-समय पर तकनीकी प्रगति के साथ विकसित नहीं किया गया था और खराब राजनीतिक इच्छाशक्ति के कारण सीमावर्ती क्षेत्रों में रहने के लिए उचित व्यवस्था प्रदान नहीं की गई थी। इतनी खराब परिस्थितियों में भी हमारे सशस्त्र बल दृढ़ निश्चय के साथ हमारी सीमाओं और देश को हर तरफ से सुरक्षित कर रहे हैं।

पिछले 7 सालों में क्या बदला ?

एक युद्ध आरक्षित स्टॉक (डब्ल्यूआरएस) जिसे फ्री पोजीशन स्टॉक के रूप में भी जाना जाता है, 2014 से पहले एक छोटे से तीव्र युद्ध के लिए भी सिर्फ सात से दस दिनों के लिए था। हम अपनी सीमाओं की रक्षा के लिए हथियारों और गोला-बारूद के अपर्याप्त भंडार के कारण एक छोटे से तीव्र युद्ध को भी संभालने की स्थिति में नहीं थे, यह स्थिति 2017 तक जारी रही, हालांकि मोदी सरकार द्वारा हमारे बलों को मजबूत बनाने के लिए लगातार कदमों के बाद बड़े परिवर्तन हुए। वर्ष 2017 के बाद ठोस कदम, सहायक नीति निर्णय, निर्णय लेने में रक्षा बलों को सशक्त अधिकार और भारी वित्त प्रदान करने के साथ, ओआरओपी को लागू करना। आज, हमारे पास 20 दिन के हथियार और गोला-बारूद छोटे तीव्र युद्ध के लिए आरक्षित हैं। हम आज 10 दिनों तक लंबे और तीव्र युद्ध करने में सक्षम हैं।

हमें चीन और पाकिस्तान दोनों मोर्चों के लिए खुद को तैयार रखना होगा। इसलिए हमारे सशस्त्र बलों और सरकार द्वारा अपनाई गई रणनीति दोनों देशों से एक साथ निपटने की है, भले ही वह स्थिति उत्पन्न हो, रॉकेट और मिसाइलों से लेकर उच्च क्षमता वाले टैंक और तोपखाने के गोले तक के गोला-बारूद के

भंडार को शामिल किया जा रहा है, यानि एक पूर्ण युद्ध के लिए विकसित किया जा रहा है। 40 दिनों तक चलने के लिए पर्याप्त स्टॉक रखने के अंतिम लक्ष्य के साथ हमारी सरकार और सेना काम कर रही है। कई प्रकार के महत्वपूर्ण गोला-बारूद में पहले की भारी कमियों को काफी हद तक दूर कर दिया गया है।

आयात को कम करने और निर्यातोन्मुखी देश बनने के लिए रक्षा हथियारों और गोला-बारूद के स्वदेशी उत्पादन पर अधिक जोर दिया जा रहा है। अभी भी लड़ाकू विमानों और भारी तोपखाने से लेकर पनडुब्बी रोधी विमानों और स्टील्थ फ्रिगेट तक अधिक से अधिक निर्यात क्षमताओं को जोड़ने के लिए इस पर काम कर रहे हैं। हम डीआरडीओ, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और टाटा, एलएंडटी जैसी कंपनियों की मदद से प्रधान मंत्री मोदी की प्रमुख पहल “मेक इन इंडिया” के तहत भारत में कई रक्षा हथियारों का विकास और निर्माण कर रहे हैं। भारत के सशस्त्र बलों को मजबूत किया जा रहा है और सीमा पर सुविधाओं में विशेष रूप से दूरस्थ और दुर्गम क्षेत्रों में सुधार किया गया है। पिछले छह वर्षों में मोदी सरकार द्वारा विभिन्न देशों से खरीदे गए और स्वदेशी रूप से विकसित और निर्मित हथियारों और गोला-बारूद की एक बड़ी सूची है। इसलिए सशस्त्र बलों पर खर्च पहले की सरकार के खर्च की तुलना में बहुत अधिक है।

• राफेल लड़ाकू विमान 36 • P8I विमान • नौसेना के युद्धपोत • हथियार का पता लगाने वाले राडार • स्मर्च रॉकेट • बराक स्टा मिसाइलें • अपाचे हेलीकॉप्टर • एमआई 17 हेलीकॉप्टर • माईन काउंटर माप पोत • आकाश मिसाइल • चिनूक हेलीकॉप्टर • कामोव का-226 हेलीकॉप्टर • अल्ट्रा लाइट हॉवित्जर • एलआरएसएएम • BVRAAM • AEW&C • मेल यूएवी • ATAGS • तेजस विमान • आईएनएस कोच्चि • आईएनएस कलवारी • वरुणास्त्र • मारीच • आईएनएस अस्त्रधारिणी • सुखोई एसयू-30 के साथ एकीकृत ब्रम्होस • 32 हॉक्स • एचटीटी 40 विमान • धनुष आर्टिलरी गन सिस्टम

ये कुछ हथियार और गोला-बारूद हैं लेकिन सूची बड़ी लंबी है। कई उपकरण निर्माण के अधीन हैं या आंशिक रूप से या पूरी तरह से वितरित किए गए हैं। इसने हमारे सशस्त्र बलों को दोनों मोर्चों पर मुकाबला करने के लिए मजबूत किया है। तो अगर हम देखते हैं कि पिछले छह वर्षों में विकसित इस काउंटर तंत्र ने हमारे दुश्मन देशों में दहशत पैदा कर दी है, यह जानकर कि भारत किसी भी स्थिति से निपटने के लिए भी शक्तिशाली है और दोनों देशों द्वारा किसी भी दुस्साहस का जवाब दे सकता है। पिछले छह वर्षों के दौरान डोकलाम, गलवान और सीमा पर उत्पन्न अन्य परस्पर विरोधी स्थितियों में भारत पहले ही बाहुबल और ताकत दिखा चुका है। इसलिए इसने वैश्विक परिदृश्य में हमारी स्थिति को काफी मजबूत किया है।

इसलिए कुछ लोग पेट्रोल और डीजल की कीमतों पर रो रहे हैं, मैं उनसे इन पहलुओं पर गौर करने का अनुरोध करता हूं जहां हमारे देश की सुरक्षा हमारी मुख्य चिंता होनी चाहिए और अगर किसी देश की सुरक्षा कमजोर है तो देश भविष्य में सबसे बुरे दिन देखेंगे। इसलिए इन सभी छोटी-छोटी बातों के लिए रोने के बजाय आइए इसे व्यापक दृष्टि से देखें और अपने देश को मजबूत करने और इसे वैश्विक महाशक्ति बनाने की दिशा में आगे बढ़ने के लिए सरकार की पहल का समर्थन करें।

संपर्क

पंकज जगन्नाथ जयस्वाल

7875212161